साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 8, अंक : 27 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 22 फरवरी 2023 से 28 फरवरी 2023 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

प्रधानमंत्री श्री मोदी के पर्यावरण-संरक्षण के अभियान में मध्यप्रदेश अग्रणी रहेगा-मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और मंत्रि-परिषद के सदस्यों ने आज राजा भोज विमानतल परिसर में प्रकृति की सेवा संकल्प के 2 वर्ष पूर्ण होने पर विशाल वृक्षारोपण कार्यक्रम में पौधे लगाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान के नियमित पौध-रोपण के संकल्प और उसके क्रियान्वयन के 2 वर्ष पूर्ण होने पर यह कार्यक्रम किया गया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी क्लाईमेट चेंज के खतरों को कम करने के लिए पर्यावरण-संरक्षण का अभियान संचालित कर रहे हैं। उनका मानना है कि हमें धरती को किसी भी तरह बचाना है। इसके लिए पौध-रोपण का अभियान निरंतर चलना चाहिए। भोजन की तरह ऑक्सीजन भी मनुष्य की आवश्यकता है। एक पेड़ पर न जाने कितनी जिन्दगियाँ पलती हैं। पेड़ छाँव देने के साथ ही पक्षियों का बसेरा और असंख्य कीट-पतंगों का आश्रय स्थल और जीवन का आधार हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी वर्ष 2070 तक नेट जीरो उत्सर्जन के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए विभिन्न स्तर पर पर्यावरण बचाने का कार्य कर रहे हैं। उनके संकल्प के अनुरूप मध्यप्रदेश अग्रणी भूमिका का निर्वाह करेगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सांसों का प्रबंध हमें ही करना है। यह धरती आने वाली पीढ़ियों के लिए तैयार हो, इसलिए हम सभी का कर्तव्य है पौधे लगाएं। हम पेड़ लगाते हैं तो इनसे हमें ही ऑक्सीजन मिलती है। मध्यप्रदेश को हरा-भरा रखने का संदेश दें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में पौधे लगाने के अभियान में मीडिया का काफी सहयोग रहा है और इसके लिए मीडिया के बंधुओं का हम सभी आभार व्यक्त करते हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने 2 वर्ष में प्रतिदिन किए गए पौध-रोपण की विस्तृत जानकारी दर्शाने वाली सचित्र पुस्तिका का विमोचन किया। इसकी ई-कॉपी mpinfo.org पर देखी जा सकती है।

सबसे बड़ा मानव निर्मित वन बनेगा, श्रीराम आस्था मिशन ने देखभाल लिया दायित्व

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि भोपाल एयरपोर्ट के पास इस विशाल मानव निर्मित वन की देखभाल का दायित्व श्रीराम आस्था मिशन ने लिया है। यह प्रदेश का सबसे बड़ा मानव निर्मित वन होगा। यहाँ कुल एक लाख 40 हजार पेड़ लगाए जाएंगे। श्रीराम वन में 120 प्रजाति के पौधे रोपने की योजना है। पेड़-पौधों की देखभाल की जिम्मेदारी मिशन की रहेगी।

पौध-रोपण से संबंध भी हो रहे प्रगाढ़

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि पौध-रोपण अभियान से अनेक अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। पर्यावरण की रक्षा के साथ ही परिवारों द्वारा जन्म-दिवस और विवाह वर्षगाँठ और अनेक अवसर पर पौधे लगाने के कार्य से दिन की शुरुआत की जाती है। पति-पत्नी जब मिल कर विवाह वर्षगाँठ पर पौधा लगाते हैं तो उनका प्रेम संबंध प्रगाढ़ होता है। इसी तरह बच्चों के जन्म-दिन पर पौधे लगाना सभी को प्रसन्नता देता है। बच्चों को भी छोटी उम्र से अच्छे कार्य के संस्कार प्राप्त होते हैं। वे इस भाव को समझते हैं की पेड़ लगाना मतलब धरती माता का श्रृंगार करना है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि माता-पिता और परिवार के अन्य दिवंगत सदस्यों की स्मृति में पौधा लगाना उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है।

अंकुर अभियान में लगाए पौधों का रिकार्ड रखने की व्यवस्था

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि अंकुर अभियान में 15 लाख से अधिक लोगों ने सहभागिता की है। कुल 37 लाख से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं। अभियान में इन पौधों का रिकार्ड भी रखा जा रहा है। विदेश से आए अनेक लोग ने अपने लगाए पौधों की जानकारी क्यूआर कोड से प्राप्त करने की सुविधा का उपयोग किया है। वायु दूत एप्लीकेशन इस कार्य में सहयोगी बनी है। यह अभियान विराट जन-आंदोलन बन रहा है। आज विकास यात्राओं की शुरुआत के समय भी पौधे लगाने का कार्य किया गया।

मध्यप्रदेश में अभियान को दिन-प्रतिदिन मिल रही लोकप्रियता

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि 19 फरवरी 2021 से नर्मदा मैया के उद्गम स्थल अमरकंटक से प्रतिदिन पौधा लगाने की उनकी शुरुआत को जन-समर्थन मिल रहा है। गत 2 वर्ष में एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब पौधा न लगाया हो। कोरोना काल में भी मॉस्क और सेनेटाइजर के उपयोग के साथ एहतियात बरतते हुए अकेले ही पौधा लगाने का कार्य किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि 12 राज्य में उन्होंने पेड़ लगाए हैं। राज्यों में पौधा लगाने के समय वहाँ के लोगों को सुखद आश्चर्य भी होता है कि प्रवास पर रह कर भी यह कार्य किया जा सकता है। प्रदेश में अनेक स्थान पर पौधा लगाने का कार्य जन-सहयोग से हुआ है। भोपाल के स्मार्ट उद्यान के अलावा इन्दौर के ग्लोबल गार्डन में प्रवासी भारतीय सम्मेलन के अतिथियों, जी-20 देशों की बैठक में आए प्रतिनिधियों ने भी पौधे लगाए। भोपाल में विभिन्न धर्मगुरुओं, सामाजिक संस्थाओं, मीडिया प्रतिनिधियों, विद्यार्थियों, चिकित्सकों, खिलाड़ियों, सिने और नाटक जगत के प्रतिनिधियों और समाज के विभिन्न वर्गों के लोग साथ में पौधे लगाते हैं। देश-विदेश तक यही संदेश गया है कि मध्यप्रदेश पेड़ लगवाना भी सिखाता है। नागरिकों में पर्यावरण प्रेम बढ़ा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भी इस अभियान की लोकप्रियता श्योपुर जिले के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में 17 सितम्बर 2022 को अफ्रीका से लाए गए चीतों को छोड़ते समय देखी है। प्रधानमंत्री ने भी वहाँ पौधा लगाया था।

ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों को भी बढ़ावा मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि जहाँ आने वाली पीढ़ियों के लिए सांसों का प्रबंध वृक्षा-रोपण से किया जा रहा है। वहीं धरती को बचाने के लिए सोलर एनर्जी के प्रयोग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। जहाँ ओंकारेश्वर में पानी पर पैनल बिछा कर सौर ऊर्जा उत्पादन की पहल हुई है, वहीं रायसेन जिले के विश्व धरोहर स्थल साँची को देश की प्रथम सोलर सिटी बनाने का कार्य किया जा रहा है। आगामी 3 मई को विधिवत कार्यक्रम के माध्यम से पूरे विश्व तक सोलर सिटी का संदेश जाएगा। सांसद श्री विष्णु दत्त शर्मा ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री चौहान को निरंतर 2 वर्ष से प्रतिदिन पौधा लगाने के कार्य के लिए बधाई दी। अन्य मंत्री गण ने भी मुख्यमंत्री श्री चौहान को बधाई दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सभी जन-प्रतिनिधियों और नागरिकों का पौध-रोपण अभियान में सहयोग के लिए आभार माना। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ मंत्री गण ने भी पौधे लगाए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पौध-रोपण पर केंद्रित चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान को अनेक स्वैच्छिक संगठनों के सदस्यों ने तस्वीरें और पुस्तकें भेंट की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने एक पुराने वट वृक्ष का अवलोकन किया जो किसी अन्य स्थान से उखाड़ने के बाद यहाँ वैज्ञानिक तकनीक से स्थापित किया गया है। भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय ने आभार माना।

यहां गर्मी ने तोड़े रिकॉर्ड, पूर्वोत्तर में भारी बारिश-वज्रपात के आसार

मौसम विभाग के अनुसार पूर्वोत्तर राज्यों में बंगाल की खाड़ी से दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों के निचले स्तरों पर तेज हवाएं चल रही हैं। इसके कारण अगले पांच दिनों के दौरान अरुणाचल प्रदेश में हल्की से मध्यम बारिश होने का अनुमान है। वहीं असम और मेघालय, नागालैंड और मणिपुर तथा उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम के अलग-अलग हिस्सों में हल्की बारिश हो सकती है। मौसम विभाग ने 21 और 22 फरवरी को अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में भारी बारिश होने के आसार जताए हैं। इसी बीच अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय, नागालैंड और मणिपुर के अलग-अलग हिस्सों में बिजली गिरने की आशंका है। पश्चिमी विक्षोभ मध्य स्तरों पर पछुआ हवाओं में लगातार सक्रिय है। इसके कारण पंजाब और उससे सटे उत्तरी पाकिस्तान के निचले स्तरों पर चक्रवाती प्रसार बना हुआ है। उपरोक्त मौसम संबंधी गतिविधियों के कारण मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों के दौरान पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में हल्की बारिश और बर्फबारी होने का पूर्वानुमान लगाया है। वहीं उसके अगले तीन दिनों तक मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने कहा कि अगले पांच दिनों के दौरान देश के बाकी हिस्सों के मौसम में कोई विशेष बदलाव होने का अनुमान नहीं है। अगले दो दिनों के दौरान पश्चिम भारत में अधिकतम तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने का पूर्वानुमान है और इसके बाद अधिकतम तापमान में कोई खास बदलाव नहीं होगा। देश में न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी देखें तो कल पंजाब के अधिकांश हिस्सों, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी राजस्थान के अलग-अलग हिस्सों, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली, पूर्वी राजस्थान के कुछ हिस्सों तथा उत्तराखंड के अलग-अलग हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से 5.1 डिग्री सेल्सियस या उससे ऊपर रहा। वहीं कल पूर्वी उत्तर प्रदेश, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम, पश्चिम बंगाल में गंगा के तटीय इलाकों, अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के कई इलाकों में न्यूनतम तापमान सामान्य से 5.0 डिग्री सेल्सियस यानी काफी ऊपर दर्ज किया गया। कल बिहार, गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ के कुछ हिस्सों और पश्चिम उत्तर प्रदेश, पूर्वी मध्य प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों, तटीय कर्नाटक के अधिकांश इलाकों, ओडिशा के कई हिस्सों, मध्य महाराष्ट्र, कोंकण और गोवा के कुछ हिस्सों तथा पश्चिम मध्य प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में न्यूनतम तापमान सामान्य से 3.0 डिग्री सेल्सियस ऊपर रहा। वहीं अधिकतम तापमान में वृद्धि की बात करें तो कल राजस्थान और हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली के अधिकांश हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य 5.1 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक दर्ज किया गया। कल पश्चिम उत्तर प्रदेश और पश्चिम मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद, पूर्वी मध्य प्रदेश तथा सौराष्ट्र और कच्छ के अलग-अलग हिस्सों में भी अधिकतम तापमान सामान्य 5.1 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक रहा। वहीं कल विदर्भ और गुजरात के कई इलाकों, हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में अधिकतम तापमान सामान्य से 5.0 डिग्री सेल्सियस, यानी काफी ऊपर दर्ज किया गया। कल झारखंड के अधिकांश हिस्सों, अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल और सिक्किम, ओडिशा, छत्तीसगढ़, कोंकण और गोवा के कुछ हिस्सों, बिहार, तटीय आंध्र प्रदेश और यनम, तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल के अलग-अलग इलाकों में अधिकतम तापमान सामान्य से 3.0 डिग्री सेल्सियस ऊपर रहा।

भारत के कई राज्यों में जलवायु ख़तरों के कारण मानव निर्मित पर्यावरण को नुक़सान का उच्च जोखिम

यह पहली बार है जब दुनिया के हर राज्य, प्रांत और क्षेत्र की तुलना करते हुए विशेष रूप से निर्मित पर्यावरण पर केंद्रित एक भौतिक जलवायु जोखिम विश्लेषण किया गया है। बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पंजाब सहित भारत के नौ राज्य दुनिया के शीर्ष 50 क्षेत्रों में शामिल हैं जहां जलवायु परिवर्तन के खतरों के कारण मानव निर्मित पर्यावरण को नुकसान का खतरा है। एक नयी रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। यह रिपोर्ट सोमवार को प्रकाशित हुई है।

क्रॉस डिपेंडेंसी इनिशिएटिव (एक्सडीआई) ने 2050 में दुनिया भर के 2,600 से अधिक राज्यों और प्रांतों में मानव निर्मित पर्यावरण के लिए भौतिक जलवायु जोखिम का आकलन किया है। एक्सडीआई जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान का पता लगाने के लिए प्रतिबद्ध कंपनियों के एक समूह का हिस्सा है। मनुष्य ने अपनी जरूरत के अनुसार अपने पर्यावरण में कई बदलाव किए हैं। मानव निर्मित पर्यावरण में हर वह वस्तु शामिल है, जिसका निर्माण इंसान ने किया है। मकान, भवन, हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, अस्पताल, आदि मानव निर्मित पर्यावरण के अंग हैं। एक्सडीआई सकल घरेलू जलवायु जोखिम डेटा सेट ने इन क्षेत्रों की तुलना चरम मौसम और जलवायु परिवर्तन जैसे बाढ़, जंगल की आग, हीटवेव और समुद्र के स्तर में वृद्धि से इमारतों और संपत्तियों को नुकसान के मॉडल अनुमानों के अनुसार की। इसमें चीन और भारत पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस सूची में एशिया को उच्चतम खतरा है क्योंकि शीर्ष 200 क्षेत्रों में से आधे से अधिक (114) एशियाई क्षेत्र के हैं। विश्लेषण के अनुसार, 2050 में शीर्ष 50 सबसे अधिक जोखिम वाले राज्यों और प्रांतों में से 80 प्रतिशत चीन, अमेरिका और भारत में हैं। शीर्ष 50 राज्यों में चीन के बाद सबसे अधिक नौ राज्य भारत के हैं, जिनमें बिहार (22वां), उत्तर प्रदेश (25वां), असम (28वां), राजस्थान (32वां), तमिलनाडु (36वां), महाराष्ट्र (38), गुजरात (48), पंजाब (50) और केरल (52वां स्थान) शामिल हैं। असम में मानव निर्मित पर्यावरण के लिए जलवायु जोखिम में 1990 की तुलना में 2050 तक अधिकतम 330 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि देखी जाएगी। शीर्ष 100 में पाकिस्तान के कई प्रांत भी हैं, जिनमें सिंध प्रांत भी शामिल है। जून और अगस्त 2022 के बीच विनाशकारी बाढ़ ने पाकिस्तान के 30 प्रतिशत क्षेत्र को प्रभावित किया और सिंध प्रांत में नौ लाख से अधिक घरों को आंशिक रूप से या पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। यह पहली बार है जब दुनिया के हर राज्य, प्रांत और क्षेत्र की तुलना करते हुए विशेष रूप से निर्मित पर्यावरण पर केंद्रित एक भौतिक जलवायु जोखिम विश्लेषण किया गया है। क्षति जोखिम के लिए शीर्ष 100 में अत्यधिक विकसित और विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण एशियाई आर्थिक केंद्रों में बीजिंग, जकार्ता, हो चि मिन्ह सिटी, ताइवान और मुंबई शामिल हैं। चीन में जोखिम वाले राज्य और प्रांत यांग्त्ज़ी और पर्ल नदियों के बाढ़ के मैदान और डेल्टा के साथ विश्व स्तर पर जुड़े पूर्व और दक्षिण में केंद्रित हैं। अमेरिका में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण कैलिफोर्निया, टेक्सास और फ्लोरिडा सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे। शीर्ष 50 में कई प्रांतों और राज्यों वाले अन्य देशों में ब्राजील, पाकिस्तान और इंडोनेशिया शामिल हैं। यूरोप में, उच्च रैंकिंग वाले राज्यों में लंदन, मिलान, म्यूनिख और वेनिस शहर शामिल हैं।

पर्यावरण संरक्षण से हर साल 40 करोड़ रुपए कमाएगा इंदौर नगर निगम

इंदौर नगर निगम इंदौर पर्यावरण संरक्षण से कमाई करने वाला देश का नंबर वन शहर बन चुका है। दो साल पहले नगर निगम ने बायो गैस प्लांट के कार्बन क्रेडिट से जो कमाई शुरू की थी वह दस करोड़ रुपए से अधिक की हो चुकी है। वहीं दूसरी ओर जलूद सोलर प्लांट से निगम को हर साल 20 करोड़ रुपए कार्बन क्रेडिट से मिलेंगे और दस करोड़ रुपए से अधिक का बिजली का खर्च बचेगा। इस तरह निगम हर साल 40 करोड़ रुपए सिर्फ पर्यावरण संरक्षण से ही कमाएगा।

निगम ने दो साल पहले शहर के कचरे से बायो सीएनजी बनाना शुरू किया था। इस सीएनजी से शहर में बसें भी चलाई जाती हैं। कचरे से मिथेन उत्पन्न होती है जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है। निगम ने इस कचरे को बायो गैस में बदला और मिथेन का उत्सर्जन कम किया। इस तरह निगम ने कार्बन क्रेडिट कमाया। इस कार्बन क्रेडिट को अंतरराष्ट्रीय वॉलेंट्री कार्बन मार्केट में बेचकर निगम दस करोड़ रुपए से अधिक कमाता है। इस पूरे प्रोजेक्ट को निगम के लिए ईकेआई एनर्जी कंपनी संभालती है। यह कंपनी कार्बन क्रेडिट के मामले में दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी कंपनी है।

बजट में 40 करोड़ का लाभ देगा सोलर प्रोजेक्ट -जलूद में नर्मदा के पानी को पहुंचाने के लिए प्रोजेक्ट लग रहा है। यहां पर बहुत अधिक बिजली लगेगी। इस बिजली की पूर्ति के लिए निगम सोलर प्रोजेक्ट ला रहा है। इस प्रोजेक्ट की वजह से निगम को दस करोड़ रुपए सालाना की बिजली कम खरीदना पड़ेगी। इससे निगम के बजट में सीधे दस करोड़ रुपए का लाभ होगा। वहीं इस प्रोजेक्ट के कार्बन क्रेडिट से 20 करोड़ रुपए की कमाई होगी।

पर्यावरण को भी लाभ, हमें भी फायदा- इंदौर ने सस्टेनेबल डवलपमेंट के क्षेत्र में इतिहास रच दिया है। हाल ही में इंदौर ने देश का पहला लोकल अर्बन बॉडी का ग्रीन बॉन्ड लांच किया है। जिसमें देशभर के लोगों ने 600 करोड़ से अधिक का निवेश किया है। इससे हम जलूद में सोलर प्रोजेक्ट लगाएंगे। हमारी कोशिश है कि हम पर्यावरण संरक्षण से अधिक से अधिक लाभ ले सकें। जलूद के सोलर प्लांट से हमें 20 करोड़ रुपए से अधिक का कार्बन क्रेडिट लाभ होगा।

प्राइवेट कंपनियां में भी खुला कमाई का नया जरिया- इन्फाइनाइट एन्वॉयरमेंटल सॉल्यूशन के सीईओ सुमित सिंघवी ने बताया कि इंदौर की कंपनियां देशभर में कार्बन क्रेडिट के मामले में सबसे अच्छा काम कर रही हैं। यह कंपनियां न सिर्फ कार्बन का उत्सर्जन कम कर रही हैं बल्कि इससे अच्छी खासी कमाई भी कर रही हैं। कार्बन क्रेडिट कमाने वाली कंपनियों को इसे बेचकर न सिर्फ अंतरराष्ट्रीय बाजार में आर्थिक लाभ मिलता है बल्कि सरकार से भी उन्हें कई योजनाओं में करोड़ों रुपए का फायदा हो रहा है।

एसईसीएल को मिला मिनीरत्न श्रेणी में पर्यावरण और सतत धारणीय विकास पुरस्कार

कोरबा पर्यावरण व सतत धारणीय विकास में एसईसीएल के प्रयासों को बड़ी पहचान मिली है। नई दिल्ली में प्रतिष्ठित गवर्नेन्स नाऊ नवें पीएसयू अवार्ड के अंतर्गत एसईसीएल को मिनीरत्न श्रेणी में पर्यावरण व सतत धारणीय विकास (इन्वायरमेंट एंड सस्टेनबिलिटी) का पुरस्कार प्रदान किया गया।

एयरोसिटी में आयोजित समारोह में देश के भूतपूर्व चीफ जस्टिस, सुप्रीम कोर्ट, दीपक मिश्रा द्वारा उक्त पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी समारोह में एसईसीएल के सीएमडी डा प्रेम सागर मिश्रा को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सीएमडी लीडरशिप अवार्ड भी दिया गया। एसईसीएल ने पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन की दिशा में कई अभिनव प्रयास किए हैं। कंपनी कोयला खनन से पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव को कम करने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। इस दिशा में कंपनी ने नई ग्रीन टेक्नालाजी व मशीनें जैसे सरफेस माइनर, कान्टिन्यूअस माइनर, हाईवाल माइनिंग को अपनाया है। कंपनी ने छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम व मध्य प्रदेश राज्य वन विकास निगम भोपाल के जरिए वृहद स्तर पर पौधारोपण का भी प्रयास कर रही है। एसईसीएल ने अपने स्थापना से आज तक 2.71 करोड़ पौधों का रोपण लगभग 10,700 हेक्टेयर भूमि पर किया गया है। इसके जरिए लगभग 5.36 लाख टन कार्बन डाइआक्साइट का कार्बन सिंक तैयार किया जा सका है। खदानों से निकले जल का प्रयोग सिंचाई व वाटर ट्रीटमेंट उपरांत पेयजल के रूप में उपयोग किया जा रहा है। समारोह में एसईसीएल के सीएमडी डा प्रेम सागर मिश्रा को सीएमडी लीडरशीप अवार्ड भी प्रदान किया गया।

विदित हो कि डा मिश्रा की अगुआई में एसईसीएल इस वित्तीय वर्ष में प्रभावी नतीजे की ओर बढ़ रहा है। कंपनी ने कोयला उत्पादन में गत वर्ष के समान अवधि की तुलना में 20 मिलियन टन तथा ओबीआर में 55 मिलियन क्यूबिक मीटर से अधिक की वृद्धि दर्ज की है। कंपनी ने कैलेंडर वर्ष 2022 में भूमि अधिग्रहण के प्रकरणों में 773 रोजगार प्रदान किया है जो कि एसईसीएल की स्थापना से अब तक किसी भी एक वर्ष में भूमि अधिग्रहण के एवज में स्वीकृत किए गए सर्वाधिक रोजगार हैं । नई दिल्ली में आयोजित समारोह में एसईसीएल के प्रतिनिधि मंडल में बीके जेना महाप्रबंधक (पर्यावरण) व लवेश चौधरी उप प्रबंधक (सीएसआर) शामिल रहे।

एनजीटी ने दिल्ली में ठोस कचरे की निगरानी के लिए समिति गठित करने का दिया निर्देश

नई दिल्ली। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने ठोस कचरे की निगरानी के लिए एक समिति गठित करने का निर्देश दिया है। इस समिति की अध्यक्षता दिल्ली के उपराज्यपाल करेंगें। यह समिति नई अपशिष्ट प्रसंस्करण सुविधाओं की स्थापना, मौजूदा अपशिष्ट प्रसंस्करण सुविधाओं को बढ़ाने और पुराने अपशिष्ट स्थलों के उपचार सहित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित सभी मुद्दों का निपटान करेगी।

कोर्ट ने समिति को 31 मार्च, 2023 तक पैदा हुए ठोस कचरे के आंकड़ों को संकलित करने के लिए कहा है। इसके बाद 1 जुलाई, 2023 तक वर्षों से जमा कचरे में आई कमी और वर्तमान प्रसंस्करण में अंतर के लक्ष्य के साथ त्रैमासिक आधार पर ग्राफ तैयार किया जाना है।

दिल्ली-हरियाणा में नजफगढ़ झील के कायाकल्प का मामला- एनजीटी ने 16 फरवरी को दिए अपने आदेश में कहा है कि यमुना को प्रभावित करने वाले नालों और जल निकायों के प्रदूषण और उनके नियंत्रण सम्बन्धी मुद्दे को दिल्ली में उपराज्यपाल की अध्यक्षता वाली एक उच्च स्तरीय समिति द्वारा निपटाया जा रहा है। ऐसे में जहां तक दिल्ली का संबंध है, नजफगढ़ झील के कायाकल्प संबंधी मुद्दे को भी यही समिति देखेगी। वहीं हरियाणा में इस मुद्दे का निपटान हरियाणा के मुख्य सचिव द्वारा किया जाएगा। गौरतलब है कि नजफगढ़ झील हरियाणा में दिल्ली और गुड़गांव की सीमा पर एक ट्रांसबाउंड्री वेटलैंड है, जोकि यमुना के कायाकल्प का अभिन्न अंग है। इस झील को कचरे के निर्वहन और अतिक्रमण से नुकसान हो रहा है।

अगले छह महीनों में पूरा हो जाना चाहिए यमुना नदी के फ्लड प्लेन की सुरक्षा के सभी उपाय-एनजीटी- जस्टिस आदर्श कुमार गोयल, सुधीर अग्रवाल और अरुण कुमार त्यागी की पीठ का कहना है कि यमुना नदी के बाढ़ क्षेत्र की सुरक्षा संबंधी सभी उपायों को अगले छह महीने के भीतर पूरा किया जाना चाहिए। गौरतलब है कि आवेदक बिहारी लाल चतुर्वेदी द्वारा एनजीटी के समक्ष यमुना डूब क्षेत्र में यमुना मिशन, मथुरा द्वारा किए जा रहे अतिक्रमण के खिलाफ एक आवेदन दायर किया गया था। आवेदक का कहना है कि, यद्यपि स्पष्ट रूप से यमुना नदी को संरक्षित और साफ करने के लिए काम किया जा रहा है और वृक्षारोपण अभियान भी चल रहा है। लेकिन इस तरह की गतिविधियों की आड़ में, यमुना बाढ़ के मैदान का अतिक्रमण भी किया जा रहा है। 8 जुलाई, 2022 को एनजीटी के आदेश पर संयुक्त समिति द्वारा दायर रिपोर्ट में कोर्ट को जानकारी दी गई थी कि कंस टीला, गौ घाट पर यमुना मिशन द्वारा बनाए गए पक्के निर्माण को हटा दिया गया है। वहीं यमुना नदी के पानी की गुणवत्ता की निगरानी मथुरा में 9 स्थानों पर हर महीने की जाती है। अवलोकन से पता चला है कि मथुरा में प्रवेश करने के बाद नदी के पानी की गुणवत्ता कहीं ज्यादा खराब हो जाती है। वहीं मथुरा से गुजरने के बाद इसमें थोड़ा सुधार होता है।

हरियाणा में यमुना से जुड़े 11 नालों में 540 एमएलडी अनुपचारित अपशिष्ट का होता निर्वहन- एनजीटी ने हरियाणा के मुख्य सचिव को सीवेज के उत्पादन और उपचार के बीच की खाई को पाटने के लिए उठाए गए कदमों पर आगे की प्रगति रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है। हरियाणा सरकार द्वारा दायर रिपोर्ट से पता चला है कि हरियाणा में यमुना से जुड़े 11 नालों में करीब 540 एमएलडी अनुपचारित अपशिष्ट का निर्वहन होता है।

इसके अलावा जानकारी मिली है कि हरियाणा के 34 शहरों में यमुना जलग्रहण में सीवेज उत्पादन और उसके उपचार की अनुमान स्थापित क्षमता के बीच 240 एमएलडी का अंतर है। हरियाणा सरकार ने कहा है कि उक्त अंतर को पाटने के लिए एसटीपी के निर्माण का काम चल रहा है जो 31 दिसंबर, 2023 तक पूरा हो जाएगा।

ऐसे में 16 फरवरी, 2023 को एनजीटी ने अपने आदेश में कहा है कि वहां सीवेज के उत्पादन और उपचार में एक बड़ा अंतर है जिसे युद्ध स्तर पर दूर किए जाने की आवश्यकता है। वहां 2027 तक लक्ष्यों को प्राप्त करने की योजना प्रस्तावित है लेकिन क्या इन चार वर्षों तक पर्यावरण को नुकसान जारी रहेगा।

कोर्ट का कहना है कि इसकी निगरानी हरियाणा के मुख्य सचिव द्वारा की जानी चाहिए और उन्हें 30 अप्रैल, 2023 तक आगे की प्रगति रिपोर्ट दायर करनी चाहिए। ट्रिब्यूनल ने इस बात पर नाराजगी जताई कि उत्तर प्रदेश ने इस मामले पर अपनी रिपोर्ट कोर्ट में दाखिल नहीं की है और उसे 30 अप्रैल, 2023 तक आगे की प्रगति रिपोर्ट दाखिल करने के लिए कहा है।

आरजिया नर्सरी में बनेगा प्रदेश का पहला वन, पर्यटन और पर्यावरण केंद्र

भीलवाड़ा शहर के पास राजिया नर्सरी में वन विभाग प्रदेश का पहला वन, पर्यटन व पर्यावरण शिक्षण केंद्र विकसित करा रहा है। केंद्र में जिले सहित प्रदेश के विभिन्न वन क्षेत्र, वन्य जीव, वनस्पति, अरावली पर्वतमाला मॉडल के रूप में दिखेंगे। देश-विदेश के पर्यटकों, वन्य जीव एवं पर्यावरण प्रेमियों को आकर्षित करने के लिए देश-विदेश के नक्शे टच स्क्रीन पर दिखेंगे। तितलियों के खास पार्क के साथ ही वुड वॉकिंग ट्रैक भी होगा। फल व फूलों की घाटी भी लोगों को लुभाएगी। सरकार ने इसे स्वीकृत कर करीब 1.98 करोड़ रुपए जारी किए हैं। वन क्षेत्रों में 200 से अधिक पेड़ व झाड़ियों की प्रजातियों के अलावा वन्य जीवों में पैंथर, चिंकारा, काले हिरण, जंगली सूअर, भेड़िया, सियार, जरख आदि विभिन्न वन क्षेत्रों में मौजूद हैं। ऐसा केंद्र न केवल भीलवाड़ा में बल्कि प्रदेश में अपनी तरह का पहला ही होगा। नर्सरी में करीब 12 हैक्टेयर जमीन है। हर्बल गार्डन- करीब आधा हैक्टेयर में हर्बल गार्डन विकसित करेंगे। इसमें औषधीय पौधों की प्रजातियां लगाएंगे। पौधों पर प्रदर्श बोर्ड भी होंगे। वन्यजीव मॉडल व सेल्फी पॉइंट- मांसाहारी वन्यजीव जैसे, बाघ, बघेरा, भेड़िया, जरख, सियार, भालू। शाकाहारी वन्यजीवों में जैसे चिंकारा, चीतल, सांभर, काला हिरण। रेंगने वाले जीव में मगरमच्छ व घड़ियाल। इन मॉडल पर वन्यजीवों की पूरी जानकारी दी जाएगी। टच स्क्रीन व नक्शों से शिक्षण- 200 वृक्ष प्रजातियों का चित्रण, वृक्ष का फोटो, फल, पुष्प आदि के चित्र एवं बीजों का संग्रहण होगा। भौगोलिक क्षेत्रों का नक्शा व वन क्षेत्रों का प्रकार, भौगोलिक विवरण, चट्टानें व मिट्टी के प्रकार, पक्षी, स्तनधारी मछलियां, रेंगने वाले जीव, तितलियां घास प्रजातियां, प्रमुख उद्योग एवं खनिज व पर्यावरणीय परिदृश्य व समस्याएं, जल एवं भूसंरक्षण संरचनाएं व हमीरगढ़ व मेनाल ईको पार्क। -नर्सरी तकनीक- इस प्रभाग में खुली नर्सरी होगी। जिसमें पौधों को उगाने की जानकारी प्रदर्शित की जाएगी। इसके अलावा नर्सरी में काम आने वाले उपकरणों के उपयोग का विवरण सहित प्रदर्शन किया जाएगा। बटरफ्लाई गार्डन- तितलियों के मॉडल एवं भीलवाड़ा में पाई जाने वाली तितलियों की 54 प्रजातियों के फोटो सहित जानकारी प्रदर्शित की जाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादकः डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008